

महासती द्वय स्मृति ग्रन्थ (फोल्डर नं. ०२०२५)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
सम्पादकीय
यत्किञ्चित्
अनुक्रमणिका

श्रद्धा सुमन-----	१-८८
संदेश -----	१
पावन प्रेरणा स्रोत -----	२
निर्धूम ज्योति -----	२
संदेश -----	३
गुणों की मधुर महक -----	४
समाज पर उपकार -----	४
ज्योति से ज्योति प्रज्वलित हो -----	५
शुभ संदेश -----	६
कमी हो गई -----	६
श्रद्धांजलि-----	७
आशीर्वचन -----	७
उनकी स्मृति अमर है -----	८
सरल स्वभावी महासतीजी -----	८
संदेश -----	९
श्रमणी समुदाय की क्षति -----	९
भावना -----	१०
विशिष्ट व्यक्तित्व की धनी -----	१०
समर्पित साधिका -----	११
इच्छा अधूरी रह गई -----	१२
शत् शत् श्रद्धांजलि -----	१२
शुभकामना -----	१४
हार्दिक श्रद्धांजलि -----	१४
श्रद्धांजलि-----	१५
अपूरणी क्षति -----	१५
श्रद्धांजलि पुष्प -----	१७
मुझे स्मति है -----	१८
अर्पित है भावांजली -----	१९

शांति एवं भव्यता की प्रतिमूर्ति -----	२०
पलकों में आहट -----	२१
गुण स्मृति -----	२१
प्रतिभा की धनी श्रमणी श्री चम्पाजी म.सा. -----	२३
भावभीनी श्रद्धांजलि -----	२४
हृदय मंदिर की आराध्या -----	२५
जनजीवन का आधार -----	२७
श्रद्धांजलि-----	२९
श्रमण संघ की दो महान विभूतियाँ -----	३०
शत् शत् श्रद्धासुमन -----	३१
आध्यात्मिक ज्योति की दिव्य मशाले -----	३२
गुणरत्नों से आप्लावित जीवन -----	३३
श्रद्धा सुमन -----	३४
मेरा स्वप्न अधूरा रह गया -----	३५
सरलता की प्रतिमूर्ति -----	३६
श्रद्धांजलि-----	३८
शोक एवं श्रद्धांजलि प्रस्ताव -----	३८
शोक प्रस्ताव -----	३९
आमेट में शोक सभा -----	३९
शोक प्रस्ताव -----	४०
हार्दिक श्रद्धांजलि -----	४०
महासती श्री कानकंवरजी म. को श्रद्धांजलि -----	४१
अपूरणीय क्षति -----	४२
उनके बताये मार्ग का अनुसरण करें -----	४३
शिवपुर में शोकसभा -----	४४
हार्दिक श्रद्धांजलि -----	४४
श्रद्धासुमन -----	४५
उपकारी गुरुवर्या -----	४५
हार्दिक श्रद्धांजलि -----	४६
दर्शन की इच्छा अधूरी रह गई -----	४७
शांत स्वभावी महासतीजी -----	४७
स्मृति ही शेष है -----	४८
हार्दिक श्रद्धांजलि -----	४९
तेजस्वी साध्वी रत्ना -----	५०
अनमोल हीरा -----	५०

सरलता की प्रतिमूर्ति -----	५१
अविस्मरणीय जीवन-----	५१
सागरसम गम्भीर -----	५२
अनमोल रत्न -----	५३
श्रद्धा के दो पुष्प -----	५३
श्रद्धांजलि-----	५५
हार्दिक श्रद्धांजलि -----	५६
श्रद्धा सुमनः महासती द्वय के चरणों में -----	६२
शोक पंचक -----	६६
श्रद्धासुमन -----	६६
श्रद्धा के सुमन भेंट चढायें -----	६८
श्रद्धा के दो फूल -----	६९
महासती श्री कनकंवरजी म. -----	६९
महासती श्री चम्पाकुंवरजी म. -----	७१
कान त्याग संसार -----	७३
शोक पंचक -----	७४
श्रद्धा पुष्पांजलि भेंट -----	७४
नारी का असली रूपः महावीर की दृष्टि में -----	७६
स्मृति के लिए -----	७८
मरुधरा की महानसती -----	७९
घणी दुःख भरी बात -----	८०
श्रद्धा सुमन -----	८१
श्रद्धा पुष्प -----	८१
धीरज कौन बंधाये -----	८२
चंपा महासइ-संइपणमामि -----	८२
चम्पा दशक -----	८४
धन्य धन्य हे महसाती -----	८५
पू. श्री कानकुंवरजी म. श्रद्धांजलि-----	८६
बिखरे शूल हरो-----	८७
किया जीवों का उद्धार -----	८८
गुरु परम्परा -----	१-४६
स्थानकवासी जैन आचार्य – परम्परा -----	१
स्वामी जी श्री जोरावमल जी महाराज -----	२०
मुनिश्री हजारीमल जी महाराज -----	२३
समता योगी स्वामी श्री ब्रजलाल जी म. -----	२८

युवाचार्य श्री मधुकर मुनि-जीवन दर्शन -----	३१
अद्भुत देह और मन के सौन्दर्य की प्रतिमा -----	४२
महासती द्वय – जीवन दर्शन -----	१-७६
महासती श्री कानकुंवर जी म. – जीवन दर्शन -----	१
पाँच कहानियाँ -----	२५
श्री कानशतक -----	३१
आँखों देखा यथार्थ -----	३५
महासती श्री चम्पाकुंवर जी म. – जीवन दर्शन -----	३८
जो पाया उनसे पाया -----	७३
महाविदुषी श्रमणी -----	७५
नारी-मूल्य और महत्व -----	१-६०
विश्व चेतना में नारी का गौरव – युवाचार्य डॉ. शिवमुनि -----	१
विश्व शांति के संदर्भ में नारी की भूमिका – मुनि श्री नेमिचन्द्रजी -----	६
अतीत की प्रमुख साध्वियाँ – श्री रमेश मुनि -----	१५
श्रमण संस्कृति में नारी-एक मूल्यांकन – श्री रमेश मुनि -----	२०
महिमामयी नारी – महासती श्री उमरावकुंवरजी -----	२७
श्रमणी तीर्थ का जैन धर्म की प्रभावना में अवदान – साध्वी डॉ. दिव्यप्रभाश्रीजी -----	३३
जैन आगम साहित्य में नारी का स्वरूप – महासती श्री उदितप्रभाश्रीजी -----	३९
साध्वी जीवन-एक चिंतन – दीक्षित डॉ. सुशील जैन -----	४३
अंध विश्वास निवारण में नारी की भूमिका – श्रीमती माया जैन -----	४७
हिन्दी काव्य के विकास में श्रमणियों का योगदान – श्री कन्हैयालाल लोढा -----	५१
जिन शासन में श्रमणियों की भूमिका – डॉ. कुसुमलता जैन -----	५७
श्रमणी परम्परा को कुचेरा की देन – साध्वी बसंत कुंवर -----	६०
जैन परम्परा के विविध आयाम -----	१-२५६
कर्मसिद्धांत की उपयोगिता – श्री देवेन्द्र मुनि -----	१
सम्यक् दर्शन – श्री सौभाग्य मुनि -----	१६
समतायोग का अंतः दर्शन – श्री रतन मुनि -----	१९
जिन और जिन शासन माहात्म्य – श्री सुकनमल मुनि -----	२२
स्वाध्याय-एक अनुचिंतन – डॉ. सुव्रत मुनि -----	३०
पुद्गल-एक पर्यवेक्षण – श्री रमेश मुनि -----	३४
जैन साधना और ध्यान – डॉ. सागरमल जैन -----	५३
जैन परम्परा में स्वाध्याय तप – डॉ. दामोदर शास्त्री -----	८२
श्रमण संस्कृति – एक परिशीलन – मुनि डॉ. राजेन्द्रकुमार -----	९८
जैन मंत्र साधना पद्धति – डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी -----	१०४
परिस्थितिकी और जैन चिंतन – डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी -----	११०

जैन दर्शन में जीव अस्तित्व की वैज्ञानिकता – डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया -----	११४
जैन धर्म सर्वोदयतीर्थ है – डॉ. भागचन्द्र -----	११७
जैन मंत्र साहित्य-एक परिचय – डॉ. संजीव प्रचण्डिया -----	१२७
समतायोग-एक अनुचिंतन – श्री जशकरण डागा -----	१३१
स्वाध्याय का सरल स्वाध्याय – श्री लक्ष्मीचंदजी -----	१४३
वर्तमान संदर्भ में जैन गणित की उपादेयता - डॉ. परमेश्वर झा -----	१४८
यंत्र रचना प्रक्रिया और प्रभाव – श्री सतीश मुनि -----	१५४
जैन दर्शन सम्मत मुक्त मुक्ति-स्वरूप साधन – पं. देवेन्द्र कुमार जैन -----	१५८
जैन धर्म में व्रत – डॉ. ए. बी. शिवाजी -----	१६८
जैन दर्शन में ज्ञान का स्वरूप – डॉ. कालिदास जोशी -----	१७४
आचारांग और कबीर दर्शन – डॉ. निजाम उद्दीन -----	१७६
स्वप्न मनोविज्ञान और मानव अस्तित्व – डॉ. वीरेन्द्र सिंह -----	१८१
समन्वय का मार्ग स्यादवाद – डॉ. उदयचन्द्र जैन -----	१८४
नीति तत्व और जैन आगम – श्री सुभाव मुनि -----	१८९
अहिंसा की परिधि में पर्यावरण संतुलन – डॉ. पुष्पलता जैन -----	१९६
जैन आचार-पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता – श्री राजीव प्रचण्डिया -----	२०२
शब्द विचार – डॉ. धन्नालाल जैन -----	२०७
जैन दर्शन में प्रयुक्त कतिपय दार्शनिक शब्द – डॉ. अलका प्रचण्डिया -----	२१०
सप्तधातु और आधुनिक विज्ञान – डॉ. सज्जनकुमार -----	२१३
मानवी मूल्य और जैनधर्म – डॉ. शारदास्वरूप -----	२२०
हेमचन्द्राचार्य और उनका सिद्ध हेम व्याकरण – प्रो. अरुण जोशी -----	२२४
बुद्धि का वैभव – डॉ. आदित्य प्रचण्डिया -----	२२९
जैन धर्म में तप का स्वरूप – मुनि श्री अमृतचन्द्रजी -----	२३४
जैन धर्म में तप का महत्व – डॉ. चांदमल बावेल -----	२३७
जैनमत में पुनर्जन्म – श्री प्रह्लादनारायण वाजपेयी -----	२४४
वर्तमान संदर्भ में शाकाहार की उपादेयता – श्रीमति कीरण सिरोलिया -----	२४७
जैन धर्म में तप – सौ. सुनीला नाहर -----	२५०
कुचेरा और जैन धर्म – श्री जतनराज मेहात -----	२५३